आलेख

लाल बहादुर वर्मा

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की बधाई, मुक्ति की ओर सहयात्रा

8 मार्च को हर साल हम अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाते हैं- करीब-करीब एक रुटीन की तरह। हम से हमारा मतलब है मुख्यत: महिलायें, महिलाओं में भी मुख्यत: शहरी और शिक्षित महिलायें। (कुछ वर्ष पहले जौनपुर के एक गाँव में महिला दिवस पर उत्पला शुक्ला ने गाँव की महिलाओं की तीन टांग की दौड़ करवायी थी तो आशा की किरण फूटी थी।)

यह सच है कि पिछले सौ सालों में नारी मुक्ति का दायरा बढ़ा है। जब भी अवसर मिला है नारियों ने अपनी क्षमताओं और संभावनाओं का परिचय दिया है। पर मूल बात यह है कि क्या महिलाओं का अपने और पुरुषों के बारे में और पुरुषों का अपने और महिलाओं के बारे में दृष्टिकोण वास्तव में बदला है? सार्त्र की याद आती है जिन्होंने निश्चित ही किसी दार्शनिक और उदास क्षणों में कहा होगा pluscachang, plus ca change, plus cela meme chose – चीजें जितना बदलती हैं उतना ही वही रह जाती हैं।

समाज की मुख्य धुरी है नारी-पुरुष सम्बन्ध जो घर से बाहर तक विविध रूपों में अभिव्यक्त होते हैं। उन्हीं में वैयक्तिकता, सामाजिकता, संस्कृति, यहाँ तक कि राजनीति भी ढेरों निहितार्थों के साथ अभिव्यक्त होते हैं। हमारा मानना है कि किसी दिवस पर उस दिन मनाये जा रहे विषय की मूल बात पर अवश्य नजर डाली जानी चाहिये। जैसे स्वतंत्रता दिवस पर इस बात पर कि हमारी स्वतंत्रता की स्थिति क्या है, मजदूर दिवस पर मजदूर की और बाल दिवस पर बच्चों की स्थिति पर गौर करना अपेक्षित होना चाहिए आदि।

यहाँ हम नारी दिवस पर ही ध्यान केन्द्रित करें तो लगेगा कि आंकड़ों में साल-दर-साल नारियों की स्थिति बेहतर होती जा रही है। पर आपको क्या यह नहीं लगता कि वास्तव में नारी की पीड़ा और गहरी होती जा रही है। नारी पहले भी उत्पीडित अपमानित होती थी- शोषण तो आम बात थी। आज की स्थिति को एक उदाहरण से समझें पहले नारी प्राय: अनुपस्थित या परदे में दिखती थी, आज वह हर जगह उपस्थित है।

वह मतदाता है, चालक है, संचालक है, विद्यार्थी है, शिक्षक है, दार्शनिक है, विचारक है, उद्यमी है, साहित्यकर्मी है, यहाँ तक कि अर्थशास्त्री और बैंकर भी है, धर्मगुरु भी है। यह नितांत सकारात्मक और उत्साहवर्धक है। पर ज़रा गौर करिए उसकी उपस्थिति का सबसे बड़ा पक्ष क्या है- वह सबसे अधिक आज भी सेक्स सिम्बल की तरह उपस्थित है। आज की सबसे निर्याणक सच्चाई है बाज़ार और बाज़ार की सबसे बड़ी सच्चाई है किसी भी सामान को बेचने में सबसे अधिक नारी देह का इस्तेमाल।

विडंबना यह है कि इसका विरोध अधिकांशत: नारी भी नहीं करती। मैंने विश्विद्यालय के महिला छात्रावास की प्रबुद्ध छात्राओं से सुना है कि वहां सपनों पर विश्वसुन्दारियों का राज होता है। उनका राज तो पुरुष छात्रावास के सपनों पर भी होता ही है। पर उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही छात्राएं यह नहीं समझ सकती कि बढ़ती जा रही सौन्दर्य प्रतियोगिताएं केवल बाज़ार के प्रपंच हैं? हम यह जानते हैं कि मीडिया और सत्ता पर हावी बाज़ार सामान्य व्यक्ति को विवेकशील बनने नहीं दे रहा. पर अंतत: इस चक्रव्यूह को तोड़ना तो पडेगा ही।

इस सम्बन्ध में मुख्य समस्या मुक्ति की धारणा की सही समझ का अभाव है और समस्या के समाधान के लिए एक समग्र और सर्वव्यापी उपाय का अभाव है। मुक्ति निर्बंध नहीं होती। दूसरे, मुक्ति अविभाज्य होती है। जब तक समाज में एक भी व्यक्ति मजबूर और उत्पीडित है पूरा समाज पूरी तरह मुक्त नहीं कहा जा सकता। शासक समुदाय ही व्यक्तियों और समुदायों के अलग-अलग मुक्ति की बात कर सकता है। इस सन्दर्भ में दो टूक बात यही है कि जब तक नारी समुदाय मुक्त नहीं है तब तक पुरुष समुदाय और उसका कोई हिस्सा कभी पूरी तरह मुक्त नहीं हो सकता। विस्तार में गए बिना यहाँ यही कहा जा सकता है कि नारियों और पुरुषों को अपनी मुक्ति के लिए साथ-साथ प्रयास करना चाहिए।

यह एक लम्बी संघर्ष-यात्रा है। इसमें सत्ता, व्यवस्था, मूल्य-मान्यताएं, धर्म और संस्कार सभी एक -एक कर या साथ-साथ आड़े आते रहेंगे। पर आशा की किरण यह है कि इसमें दरारें पड़ती जा रही हैं। उन्हें लगातार बढाने की ज़रूरत है। इस संघर्ष-यात्रा का पहला किन्तु निर्याणक मोर्चा घर-घर में खुलना चाहिए। जहां संघर्ष नहीं सहभागिता के साथ पारिवारिक जनतंत्र कायम किया जा सके। जब तक जनतंत्र सभी मानवीय सम्बंधों में चरितार्थ और लागू नहीं होता कहीं भी पूरी तरह सफल नहीं हो सकता।

इस चेतना को कार्यान्वित करने के लिए किसी भी नारीवादी कार्यक्रम को केवल नारियों का दायित्व समझने की आदत को छोड़ना पडेगा। उदाहरण के लिए नारी दिवस के कार्यक्रम केवल नारियों द्वारा नहीं आयोजित होने चाहिए। पुरुषों को उसमे मेहमानों की तरह नहीं आयोजकों की तरह इस तरह शामिल होना चाहिए ताकि यह न लगे कि कार्यक्रम नारियों द्वारा आयोजित है।

खबर (दार) झरोखा

कोलंबा कालीधर

शरीर को नकारो मत! अपने आप को स्वीकारो!

श्रीदेवी अपने समय की टॉप हीरोइन रही हैं और वो भी बिना प्लास्टिक सर्जरी के। फिर 50 पार करके उन्हें अचानक 20 साल का दिखने की धुन सवार हो गई। उसके चलते उन्होंने ढेरों सर्जरी करवाई। जिम, योग, डाइटिंग कुछ भी नही छोड़ा।

ये सब उन्होंने स्वस्थ रहने के लिए नही बल्कि जवान दिखने के लिए किया। शरीर पर हर तरह के अत्याचार किये। तो एक दिन शरीर ने उन्हें धोखा दे दिया।

हमारे समाज मे स्त्रियों को सुंदर व जवान दिखने पर बहुत जोर है। क्योकि साधारण दिखने पर शायद उन्हें वो स्थान नही मिल पाता। सुंदरता बेचने के नाम पर गली गली में ब्यूटी पार्लर भरे हैं। आपके सारे शरीर को तरह तरह के केमिकल्स से लबरेज़ करके आपको सुंदर बनाने का आश्वासन दिया जाता है। 20 तरह के फेशीयल बताये जाते हैं। 25 तरह के स्पा।

बहुत ज्यादा तो मुझे भी नही पता क्योकि ब्यूटी पार्लर से मेरे नाता ना के बराबर है। मुझे भगवान की बनाई अपनी सूरत जैसी भी है वो स्वीकार है। गाहे बगाहे शौक पूरा करके समझ आया कि ये सब मार्केटिंग का ड्रामा है क्योंकि ज्यादातर ब्यूटी पार्लर चलाने वाली महिलाएं खुद मोटी और भद्दी दिखती हैं तो वो मुझे क्या फिट बनायेंगी।

सुंदर दिखने का अधिकार हर स्त्री को है लेकिन बाहर की सुंदरता के साथ यदि अंदर की सुंदरता पर भी ध्यान दें तो आप और भी खूबसूरत हो सकते हैं। सिर्फ पतला होना ही स्वास्थ्य की निशानी नही है क्योंकि बहुत से मोटे लोग उम्र पूरी करके जाते हैं और पतले लोग समय से पहले निपट जाते हैं।

अपने को बढ़ती उम्र के साथ स्वीकारना एक तनावमुक्त जीवन देता है। हर उम्र एक अलग तरह की खूबसूरती लेकर आती है, उसका आनंद लीजिये। बाल रंगने है तो रंगिये, वज़न कम रखना है तो रखिये, मनचाहे कपड़े पहनने है तो पहनिए,बच्चों की तरह खिलखिलाइये, अच्छा सोचिये, अच्छा माहौल रखिये, शीशे में दिखते हुए अपने अस्तित्व को स्वीकारिये।

कोई भी क्रीम आपको गोरा नही बनाती, कोई शैम्पू बाल झड़ने नही रोकता,कोई तेल बाल नही उगाता, कोई साबुन आपको बच्चों जैसी स्किन नही देता। चाहे वो प्रॉक्टर गैम्बल हो या पतंजलि।सब सामान बेचने के लिए झूठ बोलते हैं।

ये सब कुदरती होता है। उम्र बढ़ने पर त्वचा से लेकर बॉलों तक मे बदलाव आता है। पुरानी मशीन को मेंटेन करके बढ़िया चला तो सकते हैं उसे नई नही कर सकते। ना किसी टूथपेस्ट में नमक होता है ना किसी में नीम। किसी क्रीम में केसर नही होती क्योंकि 2 ग्राम केसर भी 500 रुपए से कम की नही होती।

जो आपकी पॉकेट सम्भव करती है वो प्रसाधन खरीदिये क्योंकि केमिकल्स सब मे हैं। लक्स की बनियान साधारण बनियान से इसलिये महंगी है क्योंकी उसमे विज्ञापन के लिए सनी देओल और अक्षय कुमार होते हैं। और वे स्वयं लक्स नही कैल्विन क्लाइन या पियरे कार्डिन पहनते हैं। करीना कपूर कभी लक्स साबुन से नही नहाती और अमिताभ बच्चन लाल तेल नही लगाता।

कोई बात नही अगर आपकी नाक मोटी है तो,कोई बात नही आपकी आंखें छोटी हैं तो,कोई बात नही अगर आप गोरे नही हैं या आपके होंठों की बनावट पर्फ़ेक्ट नही हैं....

फिर भी हम सुंदर हैं, अपनी सुंदरता को पहचानिए। दूसरों से कमेंट या वाह वाही लूटने के लिए सुंदर दिखने से ज्यादा ज़रूरी है अपनी सुंदरता को महसूस करना।

हर बच्चा सुंदर इसलिये दिखता है कि वो छल कपट से परे मासूम होता है और बडे होने पर जब हम छल व कपट से जीवन जीने लगते है तो वो मासूमियत खो देते हैं। और उस सुंदरता को पैसे खर्च करके खरीदने का प्रयास करते हैं।

हमारी महिलायें दिन रात पार्लर के चक्कर काटती रहती हैं सुंदर दिखने के प्रयास में...

लेकिन क्या ये प्रेशर उनके पति,घरवालों या प्रेमी की ओर से आता है? साधारण दिखने वाली लड़कियों की शादी नही होती, सांवली लड़कियों को उपेक्षा झेलनी पड़ती है, मोटी लड़कियों पर पतले होने का दबाव होता है। इस प्रेशर के चलते उन्हें केमिकल्ज़ और दवाओं का सहारा लेना पड़ता हैं।

क्यों अभी भी हमारे समाज मे मन की खूबसूरती पर ध्यान नही जाता?

हमारे पुरुष वर्ग का ये कर्तव्य है कि अपने परिवार की महिलाओं को ये प्रेशर देना छोड़ दें। अपनी पत्नी, बेटी, बहन को ये अहसास दिलायें की वो प्राकृतिक रूप से सुंदर हैं वरना वो केमिकल्स का सहारा लेकर अपना स्वास्थ्य खराब कर लेंगी।

थोड़ा बहुत चलता है लेकिन सुंदर दिखने की चाह में कुछ भी कर गुज़रना आपकी जान ले सकता है।आजकल युवा लड़के बॉडी बनाने की धुन में पागल रहते हैं। ये असर है उन फिल्मी सितारों और मॉडल्स का जिससे ये युवा सोचते हैं कि वो अपने चहेते हीरो जैसी बॉडी बना कर हीरो जैसे दिखेंगे।

आपको शायद पता नही कि एक भी हीरो प्राकृतिक शरीर नही बनाता। इनके पीछे बहुत सी प्लास्टिक सर्जरी, steroids implants, lyposuctions, body contouring का हाथ होता है। आपरेशन से 6 पैक बनवाते हैं, चेहरे पर सर्जरी करवाते हैं, बाल उगवाते हैं, मांसपेशियों में सिलिकॉन भरवाते हैं और ये सब वो इसलिते करते हैं क्योंकि उन्हें इन सबका पैसा मिलता है। स्क्रीन पर सुंदर दिखना उनके धंधे की मजबूरी है उसके लिये वो शरीर से भी खेलते हैं वरना उन्हें कोई काम नही देगा।

लेकिन आम जीवन मे हमे बॉडी दिखाने के पैसे नही मिलते। काम करने के पैसे मिलते हैं तो हम हीरो जैसे दिखने से अच्छा है अपने काम मे हुनर दिखायें। हमारी तरक्की तो उसी से होगी।

ये फ़िल्मि स्टारों और मॉडल जैसा दिखने की चाह में हमारा समाज एक प्रेशर में जी रहा है। पेट निकल गया तो कोई बात नही उसके लिए शर्माना ज़रूरी नही । आपका शरीर आपकी उम्र के साथ बदलता है तो वज़न भी उसी हिसाब से घटता बढ़ता है उसे समझिये।सारा इंटरनेट और सोशल मीडिया तरह तरह के उपदेशों से भरा रहता है ये खाओ,वो मत खाओ ठंडा खाओ गर्म पीओ, कपाल भाती करो, पॉवर योगा कर,सवेरे नीम्बू पीओ ,रात को दूध पीओ, ज़ोर से सांस लो, लंबी सांस लो, दाहिने से सोइये बाहिने से उठिए

हरी सब्जी खाओ, सब्जियी में हारमोन है दाल में प्रोटीन है,दाल से क्रतिनिन बढ़ जायेगा।

अगर पूरे एक दिन सारे उपदेशों को पढ़ने लगें तो पता चलेगा ये जिन्दगी बेकार है। ना कुछ खाने को बचेगा ना कुछ जीने को!! आप डिप्रेस्ड हो जायेंगे।

ये सारा ऑर्गेनिक ,एलोवेरा, करेला,मेथी ,पतंजलि में फंसकर दिमाग का दही हो जाता है। स्वस्थ होना तो दूर स्ट्रेस हो जाता है। अरे! कभी ना कभी तो मरना है अभी तक बाज़ार में अमृत बिकना शुरू नही हुआ।

दोस्तों हर चीज़ सही मात्रा में खाइये, हर वो चीज़ थोड़ी थोड़ी जो आपको अच्छी लगती है। भोजन का संबंध मन से होता है और मन अच्छे भोजन से ही खुश रहता है। मन को मारकर खुश नही रहा जा सकता।

थोड़ा बहुत शारीरिक कार्य करते रहिए,टहलने जाइये, लाइट कसरत करिये व्यस्त रहिये, खुश रहिये ,शरीर से ज्यादा मन को सुंदर रखिये।अगर पैसे से सुंदरता व जीवन खरीद लिया जाता तो कोई बड़ा आदमी इस दुनिया से ना जाता और हर अमीर आदमी सुंदर होता। सदा स्वस्थ, व्यस्त और मस्त रहिये।

तेरे माथे पे यह आंचल बहुत ही खूब है लेकिन
तू इस आंचल से एक परचम बना लेती तो अच्छा था
-मजाज लखनवी

लड़कियों को खतरा पितृसत्तात्मक समाज से नहीं

लड़कियों को खतरा पितृसत्तात्मक समाज से नहीं है,धार्मिक कट्टरपंथियों और फासिस्टों से नहीं है बल्कि उनके खुद के और लड़कों के हारमोन विस्फोट से है इससे बचाव के लिए लड़के-लड़कियों के लिए हर जगह अलग-अलग व्यवस्था ज़रूरी है और लड़कियों की स्वतंत्र आवाजाही पर रोक ज़रूरी है। - **मेनका गांधी, मंत्री, भारत सरकार।**

इतने मौलिक फासिस्ट विचार के लिए सभी फासिस्ट मेनका के शुक्रगुज़ार होंगे। ये सदविचार उन्होने अंतरराष्ट्रीय नारी दिवस के अवसर पर प्रकट किए हैं लड़कियो, घरों में कैद रहो, बाहर कभी किसी से मिलना-जुलना मत, पता नहीं कब हारमोन विस्फोट हो जाये और तुम खुद अपना चरित्र खो दो !!!

मेनका जैसों को मुँह तोड़ जवाब, मशहूर शायर मजाज लखनवी ने साथ दिये पोस्टर के आह्वान में दर्ज किया है।